Date – 02/09/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Jaina Logic – II part

Scanned with CamScanner

जैन तर्कशास्त्री साहश्य की उपयोगिता को बौद्धों की तरह ही स्वीकारते हैं। उनके अनुसार साहश्य की उपयोगिता दो तरह से दिखलायी जा सकती है- व्याप्तिनिर्धारण तथा साध्यप्रतिपत्ति। लेकिन पक्षधर्मतानिश्चय को नहीं स्वीकारा गया है। जैन तर्कशास्त्र

के अनुसार अनुमान का आधार मात्र व्याप्ति है, पक्षधर्मता नहीं। व्याप्तिनिर्धारण और साध्यप्रतिपत्ति को जिस तरह बौद्ध तर्कशास्त्रियों ने व्याख्यायित किया है, उसी तरह जैन तर्कशास्त्री भी करते हैं अर्थात् बौद्ध तर्कशास्त्र द्वारा की गई व्याख्या ही जैन तर्कशास्त्र स्वीकारता है।

न्याय और बौद्ध तर्कशास्त्रों में साध्य के प्रकारों का उल्लेख नहीं है, परंतु जैन तर्कशास्त्र के अनुसार साध्य तीन प्रकार के हैं— प्रमाणसिद्ध, और उभयसिद्ध। माणिक्यनंदी, वादिदेवसूरि, हेमचंद्र और धर्मभूषण ने साध्य के इन तीन प्रकारों को स्वीकारा है। उनके अनुसार अनुमान में धर्मी अर्थात् पक्ष को सर्वथा प्रसिद्ध (ज्ञात) होना आवश्यक है अन्यथा उसके आश्रय में रहनेवाले घटक 'साध्य-हेतु' की वास्तविकता नहीं जानी जा सकती। पक्ष को वास्तविक रूप से जानने का साधन प्रमाण, विकल्प या दोनों हो सकता है। यह पर्वत अग्निमान् है- इस वाक्य में साध्य अग्नि की सिद्धि 'यह पर्वत' के प्रत्यक्ष द्वारा सिद्ध होता है। अतः यहां साध्य (अग्नि) को जानने का माध्यम प्रमाण (प्रत्यक्ष) सिद्ध पक्ष (पर्वत) है। इसलिए यहां साध्य प्रमाणसिद्ध होता है। सर्वज्ञ है- इस वाक्य में 'सर्वज्ञ' जो पक्ष है का निश्चय विकल्प द्वारा होता है। सर्वज्ञ पद का कोई बाधक प्रमाण भी नहीं है अर्थात इस वाक्य का खंडन किसी प्रमाण से नहीं हो पाता और न ही इसकी सिद्धि हो पाती है। इसे विकल्प द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। 'सर्वज्ञ' पक्ष है। किसी भी प्रमाण से 'सर्वज्ञता' को साबित करना असंभव है। इसलिए यह पक्ष (सर्वज्ञ) कल्पनाश्रित होने के कारण विकल्पसिद्ध साध्य कहलाता है। विकल्पसिद्ध साध्य का एक दूसरा उदाहरण लिया जा सकता है; खरश्रृंग अर्थात खरहे के सिर पर सींग। यह वास्तविकता पर आधारित है। चौपाया होने के कारण खरहा के सिर पर सींग होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

क्योंकि अधिकांश चौपाया सींग वाला होता है। परंतु किसी भी हालत में खरहा के सर पर सींग नहीं हो सकता। अतएव 'शशशृंग' पक्ष की सिद्धि की ऐसी कल्पना से होती है जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है। इसलिए यह साध्य की विकल्पसिद्ध है। इस प्रकार विकल्प सिद्ध दो तरह का है - कल्पनाश्रित तथा वास्तविकता पर आधारित। शब्द परिणामी है- इस वाक्य में पक्ष शब्द है। शब्द नित्य होने के कारण परिणामी होता है, क्योंकि उसकी परिणामनशीलता प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध होती है। नित्य होते हुए भी शब्द वक्ता से श्रोता तक परिणमन करता है। परंतु जब शब्द दिक्, काल की सीमा में बंध जाता है, तो वह अनित्य हो जाता है। अनित्य होते हुए भी उसकी परिणामनशीलता बनी रहती है। अनित्यता द्वारा परिणामन को सिद्ध करना विकल्पसिद्ध है। अतः इस उदाहरण में शब्द, जो साध्य है, प्रमाण और विकल्प दोनों द्वारा सिद्ध होता है। इसलिए इसे उभयसिद्ध साध्य कहा जाता है।

इस प्रकार जहाँ जैन तर्कशास्त्र साध्य और पक्ष को एक ही मानता है, वहां न्याय और बौद्ध तर्कशास्त्र पक्ष और साध्य को अलग-अलग स्वीकारते हैं। जैन और बौद्ध दोनों ही साध्य की उपयोगिता को स्वीकारते हैं, लेकिन न्याय तर्कशास्त्र साध्य की उपयोगिता पर प्रकाश नहीं डालता। न्याय और बौद्ध तर्कशास्त्रों में साध्य के प्रकारों का उल्लेख नहीं है, जबकि जैन तर्कशास्त्र साध्य के प्रकारों को स्वीकारता है।

Scanned with CamScanner